REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2023

बिलासपुर ज़िले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण : कारण और प्रभाव

सुश्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य), एस. बी. टी. महाविद्यालय, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश:

परिवार भारतीय समाज की एक मूलभूत सामाजिक संस्था है, जिस पर परंपरागत रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था का प्रभुत्व रहा है विशेषकर ग्रामीण एवं कृषि-प्रधान क्षेत्रों में। किंतु हाल के दशकों में हुए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों ने पारिवारिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप एकल परिवारों की ओर क्रमिक संक्रमण देखा जा रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे इस संक्रमण का अध्ययन करता है तथा इसके प्रमुख कारणों और इससे उत्पन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन प्राथमिक स्रोतों और भारत की जनगणना रिपोर्टों, जिला सांख्यिकी पुस्तिकाओं, सरकारी प्रकाशनों में उपलब्ध विद्वत साहित्य जैसे द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार-संबंधी प्रवासन, महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन, कृषि भूमि का विखंडन तथा आधुनिक मूल्यों का प्रभाव, जिले में संयुक्त परिवार व्यवस्था के क्षरण को तीव्र करने वाले प्रमुख कारक रहे हैं। यद्यपि एकल परिवारों की वृद्धि से व्यक्तिगत स्वायत्तता, गतिशीलता तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है, तथापि इसके साथ पारिवारिक संबंधों की शिथिलता, वृद्धजनों की देखभाल से जुड़ी समस्याएँ, पीढ़ीगत सहयोग में कमी तथा पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं के क्षरण जैसी चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि बिलासपुर जिले में पारिवारिक संरचना में आया यह परिवर्तन समकालीन भारतीय समाज में हो रहे व्यापक सामाजिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब है तथा इससे उत्पन्न चुनौतियों के समाधान हेतु संतुलित सामाजिक नीतियों की आवश्यकता है।

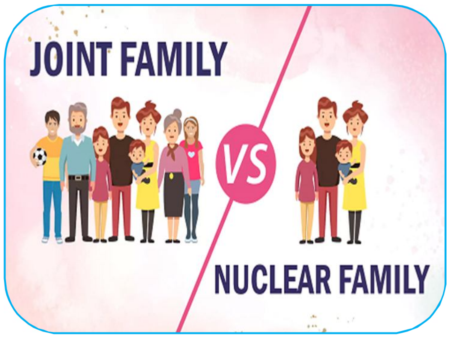

मुख्य शब्द: *संयुक्त परिवार, एकल परिवार, सामाजिक परिवर्तन, बिलासपुर जिला, पारिवारिक संरचना, नगरीकरण.*

प्रस्तावना:

परिवार भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में केंद्रीय स्थान रखता है। यह समाजीकरण, आर्थिक सहयोग, भावनात्मक सहारा तथा सांस्कृतिक मूल्यों के संप्रेषण की प्राथमिक इकाई है। सदियों से संयुक्त परिवार व्यवस्था को भारतीय सामाजिक जीवन की आधारशिला माना गया है, विशेषकर ग्रामीण एवं कृषि-प्रधान क्षेत्रों में। संयुक्त परिवार में अनेक पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे निवास करती हैं तथा संसाधनों, उत्तरदायित्वों और निर्णय-प्रक्रिया को सामूहिक रूप से साझा करती हैं।

हालाँकि, बीसवीं शताब्दी के मध्य से भारतीय समाज में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के विस्तार तथा आर्थिक उदारीकरण के कारण गहरे सामाजिक परिवर्तन देखने को मिले हैं। इन प्रक्रियाओं ने परिवार सहित अनेक पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की ओर बढ़ता झुकाव है।

छत्तीसगढ़ राज्य का बिलासपुर जिला ऐतिहासिक रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सुदृढ़ पारिवारिक संबंधों तथा संयुक्त परिवार व्यवस्था के लिए जाना जाता रहा है। कृषि, सहायक कृषि गतिविधियाँ तथा लघु उद्योग इस जिले की सामाजिक संरचना को लंबे समय तक आकार देते रहे हैं। इसके बावजूद, हाल के दशकों में यहाँ पारिवारिक प्रतिरूपों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं और एकल परिवारों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे इस संक्रमण के कारणों का विश्लेषण करना तथा इसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन करना है।

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

1) बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे संक्रमण की प्रकृति एवं सीमा का अध्ययन करना।
2) इस संक्रमण के लिए उत्तरदायी प्रमुख सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों की पहचान करना।
3) पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों के सामाजिक संबंधों, आर्थिक परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक प्रथाओं पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।
4) जिले के ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी समाज पर इस परिवर्तन के व्यापक निहितार्थों का आकलन करना।

शोध-विधि (Research Methodology):

प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर हो रहे संक्रमण का विश्लेषण करने हेतुवर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-अभिकल्प को अपनाया गया है। यह शोध पूर्णतः प्राथमिक तथा द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़े 385 उत्तरदाताओं ($n = 385$) से संकलित किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आँकड़े भारत की जनगणना रिपोर्टों, जिला सांख्यिकी पुस्तिकाओं, विभिन्न सरकारी प्रकाशनों में उपलब्ध विद्वत साहित्य से प्राप्त किए गए हैं। पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तनों का मूल्यांकन करने तथा उनके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारणों एवं प्रभावों की पहचान हेतु तुलनात्मक एवं प्रवृत्ति-आधारित विश्लेषण पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण : कारण एवं प्रभाव

बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण अनेक परस्पर संबंधित सामाजिकआर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों का परिणाम है। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण ने पारिवारिक संरचना को पुनर्गठित करने में निर्णायक भूमिका निभई है, क्योंकि इन प्रक्रियाओं के माध्यम से पारंपरिक कृषि के अतिरिक्त रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। उद्योगों, खनन गतिविधियों तथा नगरीय सेवा केंद्रों के विस्तार ने युवा परिवारजनों को रोजगार की तलाश में नगरों एवं शहरों की ओर प्रवास के लिए प्रेरित किया है। सीमित आवासीय सुविधाओं, उच्च जीवन-यापन लागत तथा कार्य-सारिणी की व्यस्तताओं के कारण संपूर्ण संयुक्त परिवारों का एक साथ रहना व्यवहारिक नहीं रह गया है, जिससे एकल परिवारों का गठन बढ़ा है और पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्थाएँ कमजोर हुई हैं।

शिक्षा के विस्तार ने भी इस संक्रमण को तीव्र किया है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिवाद, स्वतंत्रता, निजता तथा तर्कसंगत निर्णय-क्षमता जैसे मूल्यों को प्रोत्साहन मिला है। शिक्षित व्यक्ति व्यक्तिगत, आर्थिक एवं व्यावसायिक निर्णयों में स्वायत्तता की अपेक्षा रखते हैं, जो संयुक्त परिवारों की सामूहिक निर्णय-प्रणाली से प्रायः टकराती है। इसके अतिरिक्त, रोजगार-संबंधी मौसमी एवं स्थायी प्रवासन ने सह-निवास की पारंपरिक व्यवस्था को बाधित किया है, क्योंकि प्रवासी श्रमिक सुविधा एवं स्थिरता के लिए अपने कार्यस्थल के समीप छोटे एकल परिवार स्थापित करते हैं।

आर्थिक कारक, विशेषतः संपत्ति का विभाजन एवं कृषिभूमि का विखंडन, संयुक्त परिवारों के विघटन में सहायक रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि तथा उत्तराधिकार कानूनों के कारण सामूहिक कृषि की आर्थिक उपयोगिता में कमी आई है, जबकि संपत्ति विवादों ने परिवारों को अलग होने के लिए प्रेरित किया है। महिलाओं की बदलती भूमिका ने भी पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है। शिक्षा, रोजगार और कानूनी जागरूकता में वृद्धि से महिलाओं की स्वायत्तता बढ़ी है और स्वतंत्र पारिवारिक व्यवस्था के प्रति उनका झुकाव प्रबल हुआ है। साथ

ही, आधुनिक मूल्यों, जनसंचार माध्यमों तथा उपभोक्ता संस्कृति के प्रभाव ने सामाजिक आकांक्षाओं को पुनर्परिभाषित किया है, जिससे एकल परिवारों को आधुनिक, कार्यकुशल एवं समकालीन जीवन के अनुकूल माना जाने लगा है।

इस संक्रमण के प्रभाव बहुआयामी हैं। सामाजिक स्तर पर विस्तारित पारिवारिक सदस्यों के बीच संपर्क में कमी आने से पारंपरिक सहयोग तंत्र कमजोर हुआ है, यद्यपि व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है। आर्थिक दृष्टि से एकल परिवारों में वित्तीय नियंत्रण बेहतर हुआ है किंतु संकट की स्थितियों में उनकी असुरक्षा भी बढ़ी है। वृद्धजनों की देखभाल एक प्रमुख सामाजिक चुनौती के रूप में उभरी है, जहाँ अनेक वृद्धजन अकेलेपन एवं सीमित सहयोग का सामना कर रहे हैं। सांस्कृतिक स्तर पर परंपराओं का हस्तांतरण तथा पीढ़ीगत संबंध कमजोर हुए हैं, जबकि मनोवैज्ञानिक रूप से निजता और भावनात्मक तनाव दोनों प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। समग्रतः, बिलासपुर जिले में संयुक्त एवं एकल परिवारों का सह-अस्तित्व सामाजिक परिवर्तन के उस संक्रमणकाल को दर्शाता है, जो आधुनिकीकरण और परिवर्तित सामाजिक-आर्थिक यथार्थ से निर्मित हुआ है।

परिणाम (Findings):

385 उत्तरदाताओं से संकलित प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार व्यवस्था से एकल परिवार व्यवस्था की ओर एक उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहा है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि कुल उत्तरदाताओं में से 62.6 प्रतिशत (241 परिवार) वर्तमान में एकल परिवारों में निवास कर रहे हैं, जबकि केवल 37.4 प्रतिशत (144 परिवार) अब भी संयुक्त परिवारों में रह रहे हैं। यह स्थिति जिले में पारिवारिक एकलकरण की प्रधान प्रवृत्ति को दर्शाती है।

रोजगार से संबंधित कारक इस परिवर्तन के प्रमुख कारण के रूप में उभरकर सामने आए हैं। लगभग 58.2 प्रतिशत (224 उत्तरदाता) ने अपने मूल गाँव अथवा कस्बे से बाहर रोजगार के लिए प्रवासन को संयुक्त परिवार से अलग होने का मुख्य कारण बताया। वर्ष 2020 तक उपलब्ध द्वितीयक आँकड़े भी जिले में श्रमिक गतिशीलता में निरंतर वृद्धि की पुष्टि करते हैं, जिससे प्राथमिक आँकड़ों के निष्कर्ष और अधिक सुदृढ़ होते हैं।

शिक्षा का पारिवारिक संरचना पर गहरा प्रभाव पाया गया। उच्च माध्यमिक से अधिक शिक्षित उत्तरदाताओं में से 71.4 प्रतिशत ने एकल परिवार को प्राथमिकता दी, जबकि प्राथमिक शिक्षा अथवा उससे कम शिक्षित उत्तरदाताओं में यह प्रतिशत केवल 39.8 रहा। यह तथ्य शिक्षा स्तर और एकल परिवार की प्राथमिकता के बीच सकारात्मक संबंध को दर्शाता है। आर्थिक कारकों में संपत्ति का विभाजन और कृषि भूमि का विखंडन भी महत्वपूर्ण पाए गए, जहाँ 46.0 प्रतिशत (177 उत्तरदाता) ने भूमि विभाजन अथवा संपत्ति विवाद को पारिवारिक विघटन का कारण बताया।

तालिका 1 : पारिवारिक संरचना का प्रकार (N = 385)

क्रमांक	**पारिवारिक प्रकार**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1	एकल परिवार	241	62.6
2	संयुक्त परिवार	144	37.4
कुल		**385**	**100.0**

तालिका 2 : संयुक्त से एकल परिवार परिवर्तन का प्रमुख कारण– रोजगार (N = 385)

क्रमांक	**कारण**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1	रोजगार हेतु प्रवासन	224	58.2
2	अन्य कारण	161	41.8
कुल		**385**	**100.0**

तालिका 3 : शिक्षा स्तर एवं एकल परिवार की प्राथमिकता

क्रमांक	शिक्षा स्तर	एकल परिवार को प्राथमिकता (%)
1	उच्च माध्यमिक से अधिक	71.4
2	प्राथमिक शिक्षा या उससे कम	39.8

तालिका 4 : आर्थिक कारक – भूमि विभाजन / संपत्ति विवाद (N = 385)

क्रमांक	आर्थिक कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	भूमि विभाजन / संपत्ति विवाद	177	46.0
2	अन्य आर्थिक कारण	208	54.0
कुल		**385**	**100.0**

तालिका 5 : महिलाओं की आर्थिक भूमिका एवं पारिवारिक संरचना

क्रमांक	महिलाओं की स्थिति	एकल परिवार (%)
1	आर्थिक रूप से सक्रिय महिलाएँ	68.9
2	गैर-कार्यरत महिलाएँ	42.3

तालिका 6 : सामाजिक प्रभाव – विस्तारित पारिवारिक संपर्क में कमी (N = 385)

क्रमांक	सामाजिक प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	पारिवारिक संपर्क में कमी	210	54.5
2	संपर्क में कमी नहीं	175	45.5
कुल		**385**	**100.0**

तालिका 7 : पारिवारिक निर्णय-प्रक्रिया में स्वतंत्रता (N = 385)

क्रमांक	अनुभव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	निर्णय-प्रक्रिया में अधिक स्वतंत्रता	238	61.8
2	कोई विशेष परिवर्तन नहीं	147	38.2
कुल		**385**	**100.0**

तालिका 8 : आर्थिक प्रभाव – आय एवं व्यय पर नियंत्रण (N = 385)

क्रमांक	आर्थिक प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	आय-व्यय पर बेहतर नियंत्रण	228	59.2
2	आर्थिक दबाव में वृद्धि	160	41.6

तालिका 9 : वृद्धजनों पर प्रभाव (N = 385)

क्रमांक	प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अकेलापन / देखभाल में कमी	184	47.8
2	कोई प्रमुख नकारात्मक प्रभाव नहीं	201	52.2
कुल		**385**	**100.0**

तालिका 10 : सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव

क्रमांक	प्रभाव का प्रकार	प्रतिशत
1	पारंपरिक प्रथाओं में कमी	52.7
2	निजता में वृद्धि एवं मानसिक तनाव (मिश्रित अनुभव)	शेष उत्तरदाता

महिलाओं की बदलती भूमिका भी पारिवारिक संक्रमण में निर्णायक सिद्ध हुई। जिन परिवारों में महिलाएँ आर्थिक रूप से सक्रिय थीं, उनमें 68.9 प्रतिशत एकल परिवार पाए गए, जबकि गैर-कार्यरत महिलाओं वाले परिवारों में यह अनुपात 42.3 प्रतिशत रहा। सामाजिक दृष्टि से 54.5 प्रतिशत (210 उत्तरदाता) ने विस्तारित पारिवारिक संपर्क में कमी की सूचना दी, यद्यपि 61.8 प्रतिशत ने निर्णय-प्रक्रिया में अधिक स्वतंत्रता का अनुभव किया। आर्थिक रूप से 59.2 प्रतिशत ने आय–व्यय पर बेहतर नियंत्रण बताया, जबकि 41.6 प्रतिशत ने आर्थिक दबाव में वृद्धि स्वीकार की। वृद्धजनों पर प्रभाव भी महत्वपूर्ण रहा, जहाँ 47.8 प्रतिशत ने अकेलेपन अथवा देखभाल में कमी की सूचना दी। सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभावों में पारंपरिक प्रथाओं में कमी (52.7 प्रतिशत) तथा निजता और तनाव के मिश्रित अनुभव सामने आए। समग्रतः ये निष्कर्ष जिले में पारिवारिक संक्रमण की जटिल एवं बहुआयामी प्रकृति को उजागर करते हैं।

चर्चा (Discussion):

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण एक महत्वपूर्ण एवं सतत सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है, जो आर्थिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कारकों के परस्पर प्रभाव से निर्मित हुई है। उत्तरदाताओं में एकल परिवारों की प्रधानता, जनगणना आँकड़ों तथा पूर्ववर्ती समाजशास्त्रीय अध्ययनों में वर्णित क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के अनुरूप है। 385 उत्तरदाताओं से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों तथा द्वितीयक स्रोतों का संयुक्त उपयोग, अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता और वैधता को सुदृढ़ करता है।

रोजगार-संबंधी प्रवासन पारिवारिक एकलकरण का एक अत्यंत प्रभावशाली कारक सिद्ध हुआ है। बड़ी संख्या में उत्तरदाताओं ने औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र में रोजगार हेतु प्रवासन को पारिवारिक विभाजन का मुख्य कारण बताया। यह निष्कर्ष उन अध्ययनों की पुष्टि करता है, जो दर्शाते हैं कि औद्योगीकरण और नगरीय रोजगार पारंपरिक सह-निवास आधारित पारिवारिक व्यवस्थाओं को बाधित करते हैं। कृषि पर आधारित संयुक्त परिवारों वाले इस जिले में गैर-कृषि रोजगार की ओर झुकाव ने पारिवारिक प्राथमिकताओं को आर्थिक दक्षता एवं कार्यस्थल की निकटता की ओर मोड़ दिया है।

शिक्षा ने पारिवारिक दृष्टिकोण को पुनर्परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षित उत्तरदाताओं में एकल परिवार की ओर झुकाव, व्यक्तिवाद, तर्कसंगत निर्णय-क्षमता एवं आधुनिक मूल्य-बोध से संबंधित समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के अनुरूप है। शिक्षा न केवल आर्थिक गतिशीलता को बढ़ाती है, बल्कि परिवार के भीतर अधिकार, निजता और स्वायत्तता से जुड़ी अपेक्षाओं को भी परिवर्तित करती है।

संपत्ति विभाजन एवं भूमि विखंडन जैसे आर्थिक कारकों ने संयुक्त परिवारों के क्षरण को और तीव्र किया है। भूमि जोतों के छोटे होने से सामूहिक कृषि की आर्थिक उपयोगिता घटती गई, जिससे संयुक्त निवास का औचित्य कमजोर पड़ा। साथ ही, महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार में बढ़ती भागीदारी ने उनकी स्वायत्तता को सुदृढ़ किया, जिससे स्वतंत्र पारिवारिक व्यवस्था की प्राथमिकता बढ़ी।

इस संक्रमण के प्रभाव मिश्रित हैं। जहाँ एक ओर एकल परिवार स्वायत्तता, निजता और वित्तीय नियंत्रण को बढ़ावा देते हैं, वहीं विस्तारित पारिवारिक सहयोग तंत्र के क्षरण से वृद्धजनों सहित अनेक समूहों के लिए सामाजिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। समग्रतः यह परिवर्तन गहरे सामाजिक–आर्थिक बदलावों का द्योतक है और सतत सामाजिक विकास हेतु आधुनिक आकांक्षाओं एवं पारंपरिक सहयोग प्रणालियों के संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

निष्कर्ष:

अध्ययन का निष्कर्ष है कि बिलासपुर जिले में संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण निरंतर चल रहे सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का स्पष्ट परिणाम है।385 उत्तरदाताओं से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों तथा उपलब्ध जनगणना रिपोर्टों और जिला सांख्यिकी पुस्तिकाओं जैसे द्वितीयक स्रोतों के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में निरंतर कमी

आ रही है और एकल परिवारों की प्राथमिकता बढ़ रही है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार-संबंधी प्रवासन् संपत्ति का विभाजन तथा महिलाओं की बदलती भूमिका जैसे कारकों ने सामूहिक रूप से इस परिवर्तन को गति दी है। निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि एकल परिवार व्यक्तिगत स्वायत्तता, निजता तथा आय–व्यय पर नियंत्रण की दृष्टि से आधुनिक आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल हैं। तथापि इस परिवर्तन के साथ कई सामाजिक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। विस्तारित पारिवारिक सहयोग तंत्र के कमजोर होने से विशेषकर वृद्धजनों में अकेलापन, भावनात्मक असुरक्षा और देखभाल की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। साथ ही, पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं एवं पीढ़ीगत मूल्यों के हस्तांतरण में भी क्रमिक ह्रास देखा गया है। समग्रतः, बिलासपुर जिले में पारिवारिक संरचना में आया यह परिवर्तन भारत के अन्य क्षेत्रों में हो रहे व्यापक सामाजिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब है। यद्यपि एकल परिवार व्यक्तिगत आकांक्षाओं और आर्थिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करते हैं, फिर भी उभरती सामाजिक चुनौतियों के समाधान हेतु संतुलित सामाजिक नीतियों एवं समुदाय-आधारित सहयोग तंत्रों की आवश्यकता है, ताकि समावेशी और सतत सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

सन्दर्भ:

1) *Almond, B. (2006). The fragmenting family. Oxford University Press.*
2) *Bansal, P., Singh, S., & Kaur, J. (2014). Family structure and its impact on the health of women: A comparative study of joint and nuclear families. International Journal of Social Science Research, 2(1), 12-18.*
3) *Gore, M. S. (1968). Urbanization and family change. Popular Prakashan.*
4) *Ikels, W. (2004). Asian families: Continuity and change. Routledge.*
5) *Kapadia, K. M. (1958). Marriage and family in India. Oxford University Press.*
6) *Murdock, G. P. (1960). Social structure. Macmillan Company.*
7) *Parsons, T. (1943). The kinship system of the contemporary United States. American Anthropologist, 45(1), 22-38. (Seminal work on the nuclear family as a response to industrialization).*
8) *Ross, A. D. (1961). The Hindu family in its urban setting. University of Toronto Press.*
9) *Säävälä, M. (1998). The structure of the joint family in India: A case study. Journal of Comparative Family Studies, 29(2), 355-368.*
10) *Saha, B. B. (2013). Changing family structure in India: A sociological perspective. The Indian Journal of Social Science, 10(1), 45-52.*
11) *Chandrasekhar, S. (1943). The Hindu joint family. Social Forces, 21(3), 327-333.*
12) *Gurav, S., & Vageriya, V. (2019). A comparative study on social and cognitive development of children in joint and nuclear families. Journal of Child Development, 12(4), 101-110.*
13) *Khedkar, S., & Mimrot, S. (2019). Emotional maturity of adolescents in joint and nuclear families. International Journal of Psychology and Behavioral Sciences, 15(2), 88-94.*
14) *Kumar, R., & Vohra, A. (2015). A study to compare various aspects of members of joint and nuclear family. ResearchGate.*
15) *Raina, S., & Sumbali Bhan, S. (2013). A study of insecurity among adolescents in relation to their family type. Asian Journal of Home Science, 8(2), 445-449.*
16) *Sahar, N., & Muzaffar, N. (2017). Resilience and social adjustment: A comparison of joint and nuclear family systems. Pakistan Journal of Social and Clinical Psychology, 15(2), 24-30.*
17) *Singh, Y. (1986). Modernization of Indian tradition: A systemic study of social change. Rawat Publications.*
18) *Sushila, R. (2017). From joint to nuclear: Some observations on the changing pattern of family as a social institution. IOSR Journal of Humanities and Social Science, 22(6), 28-31.*
19) *Thomas, J. (1995). Adjustment problems of newly married individuals in joint and nuclear families. Journal of Family Welfare, 41(1), 54-60.*
20) *Wheaton, B. (1975). Family structure and emotional health: A study of social environments. Journal of Health and Social Behavior, 16(2), 154-165.*